भूणोल (वैकल्पिक विषय) वारा सचिन अरोड़ा

जनसंख्या भूगोल (Population Geography)

माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत

थॉमस माल्थस एक अंग्रेजी दार्शनिक थे, जिनका जन्म 1766 में इंग्लैंड में हुआ था। उनका ष्जनसंख्या के सिद्धांत पर एक निबंध "प्रस्तावित किया गया कि जनसंख्या वृद्धि अंतत: संसाधनों के उपयोग पर विनाशकारी दबाव डालेगी– जिससे अकाल, संघर्ष और अन्य तनाव होंगे।"

थॉमस राबर्ट माल्थस के अनुसार,- "उत्पादन कलाओं की एक दी हुई स्थिति के अन्तर्गत जनसंख्या जीवन निर्वाह के साधनों से अधिक तीव्रगति से बढने की प्रवृत्ति दिखलाती है।"

माल्थस के अनुसार मनुष्य में संतान पैदा करने की अपार शक्ति है क्योंकि मनुष्य में कामवासना की इच्छा कूट-कूटकर भरी हुई है जो कि जनसंख्या को तीव्रता से वृद्धि करने में सहायक है। यदि इस बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित नहीं किया जाएगा तब यह निश्चित है कि एक समय ऐसा आएगा जबकि खाद्य-सामग्री की पूर्ति बहुत कम रह जाएगी। माल्थस ने सुझाव दिया कि जनसंख्या दबाव विशेष रूप से संसाधनों के अति प्रयोग, अकाल और दुख को जन्म देता है, क्योंकि तेजी से जनसंख्या वृद्धि खाद्य उत्पादन से आगे निकल जाती है। उन्होंने तर्क दिया कि अकाल और दुख बदले में बुराई (जैसे चोरी) को जन्म देते हैं।

1. जनसंख्या तथा खाद्य सामग्री का सम्बन्ध-

माल्थस का विचार था कि 'जनसंख्या में वृद्धि आवश्यक रूप से जीवन-निर्वाह के साधनों से अधिक होती है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य की जनसंख्या बढ़ाने की शक्ति भूमि की उत्पादन शक्ति से अधिक होती है। जब जनसंख्या अधिक तेजी से बढ़ती है और खाद्य सामग्री का उत्पादन कम दर से होता है तो देश में गरीबी और भुखमरी जन्म लेने लगती है। माल्थस ने स्पष्ट रूप से कहा था कि "प्रकृति की मेज सीमित मेहमानों के लिए हैं और जो अतिथि बिना बुलाये आयेंगे, उन्हें निश्चित रूप से भूखा रहना पड़ेगा।" वास्तव में, माल्थस का यह विचार था कि देश में जनसंख्या की माँग देश की खाद्यान्न उत्पन्न करने की क्षमता से अधिक नहीं होनी चाहिए।

2. खाद्य सामग्री तथा जनसंख्या की वृद्धि दर में अन्तर-माल्थस के मतानुसार, खाद्यान्न और जनसंख्या की वृद्धि अलग-अलग दर से होती है और खाद्यान्न की तुलना में जनसंख्या अधिक तीव्रगति के साथ बढ़ती है। जनसंख्या के तीव्र गति से बढ़ने का प्रमुख कारण मनुष्य में अतृप्त काम-वासना का होना है। इसके दूसरी ओर, जीवन निर्वाह के साधनों में धीमी गति से बढ़ती है, क्योंकि उत्पादन में ह्रास का नियम लागू होता है। खाद्य-सामग्री के सम्बन्ध में माल्थस का अभिप्राय खेतों में उत्पन्न होने वाली फसलों से ही था। माल्थस का विचार था कि खेतों में अधिक पूंजी व्यय करने से उपज घटती दर से प्राप्त होती है। इस प्रकार माल्थस का विचार उत्पत्ति के क्रमागत हास नियम पर आधारित है। माल्थस द्वारा अंकगणितीय दर से वृद्धि के रूप में प्रस्तुत करने का अभिप्राय यही था कि खाद्य-सामग्री जनसंख्या की अपेक्षा कम बढ़ती है। माल्थस के अनुसार, यदि जनसंख्या को अप्रतिबन्धित रूप से बढ़ने दिया जाये तो यह ज्यामितिकश् या श्गुणोत्तर क्रमश् अर्थात् 1, 2, 4, 8, 12, 32, 64 .की दर से बढ़ती है, जबकि इसके विपरीत खाद्य सामग्री अंकगणितीय क्रमश् अर्थात् 1, 2, 3, 4, 5, 6. के हिसाब से बढ़ती है। अतः माल्थस का विचार था कि खाद्यान्नों के उत्पादन में अंकगणितीय दर से वृद्धि एक अधिकतम दर है अर्थात् खाद्य-सामग्री इस दर से अधि क मात्र में नहीं बढ़ सकती है।

3. जनसंख्या तथा खाद्य सामग्री में असन्तुलन-

जब जनसंख्या में वृद्धि रेखागणितीय दर से होगी और खाद्यान्नों में अंकगणितीय दर से तो एक सीमा के बाद दोनों में असंतुलन पैदा हो जाएगा अर्थात् खाद्यान्न की अपेक्षा खाने वाले ज्यादा हो जायेंगे। प्रकृति, जिसने मनुष्य के लिए भोजन को अनिवार्य बनाया है वह संतुलन बनाने का प्रयास करती है।

4. सन्तुलन के लिए आवश्यक उपाय-

माल्थस का विचार था कि मानव जाति के कल्याण की दृष्टि से जनसंख्या तथा खाद्य सामग्री के बीच सन्तुलन का होना आवश्यक है। इसके लिए उन्होंने दो प्रकार के उपायों का उल्लेख किया–

- (i) नैसर्गिक प्रतिबन्ध तथा
- (ii) निवारक प्रतिबन्ध

जनसंख्या वृद्धि को रोका न जाएगा तो एक समय वह आयेगा जबकि खाद्य-सामग्री की अपेक्षा जनसंख्या का आधिक्य हो जाएगा। माल्थस के अनुसार जनसंख्या उतनी ही रह सकती है जितनी कि खाद्य-सामग्री होगी। अत: इस संतुलन को बनाये रखने के लिए प्रकृति की ओर से अपने आप ही जनसंख्या की वृद्धि पर रोक लगाने के लिए प्रतिबन्ध एवं रोक उपस्थित हो जाती है। माल्थस का यह अट्ट विश्वास था कि जिस परमात्मा ने मनुष्रू के लिए खाद्यान्न को अनिवार्य बनाया है वही परमात्मा खाद्यान्न की मात्र एवं जनसंख्या की मात्र के बीच संतुलन स्थापित करता रहता है। भूखमरी, बीमारी, अकाल, बाढ, अतिवृष्टि आदि सभी प्रकृति के प्रयत्न हैं। माल्थस का कहना है कि प्रकृति खाद्य-सामग्री के अनुसार ही जनसंख्या का समायोजन करती है। इसी को उन्होंने "नैसर्गिक प्रतिबन्ध" कहा। साथ ही स्पष्ट किया कि प्रकृति द्वारा लगाये गये प्रतिबन्ध अत्यंत ही वीभत्स और भयानक होते हैं। अत: माल्थस ने यह सुझाव

भूगोल (वैकल्पिक विषय) वारा सचिन अरोड़ा

जनसंख्या भूगोल (Population Geography)

दिया है कि इस क्षेत्र में स्वयं व्यक्ति को पर्याप्त सजगता से कार्य करना चाहिए जिससे कि वह अवसर ही उपस्थित न हो सके जबकि प्रकृति स्वयं जनसंख्या को कम करने के लिए हस्तक्षेप करे। माल्थस ने कहा है कि-प्रत्येक मनुष्य को यह समझ लेना चाहिए कि वह अपनी गरीबी का स्वयं कारण है। अत: प्रत्येक मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह नैसर्गिक अवरोध की भयंकरता से बचने के लिए "निवारक प्रतिबन्ध " को अपनाये।

जनसंख्या पर अंकुश लगाने के लिए माल्थस ने दो प्रकार के "निवारक प्रतिबन्ध" का सुझाव दिया-

(i) आत्म-संयम: प्रो. माल्थस का आत्म-संयम का अभिप्राय उन सभी नैतिक गुणों को अपनाने से था जिसके अपनाने से जनसंख्या की वृद्धि रुक सकती है। इसके अंतर्गत देर से विवाह करने, ब्रह्मचर्य का पालन करने आदि के द्वारा व्यक्ति की सन्तानोत्पत्ति को नियंत्रित करना शामिल है।

परन्तु माल्थस इस बात के पक्षपाती नहीं थे कि व्यक्ति एक ओर अविवाहित रहे और दूसरी ओर कामवासना की इच्छा पूर्ति करे। ऐसा करने से जनसंख्या की वृद्धि तो नहीं होगी परन्तु माल्थस इसे नैतिकता एवं धर्म, दोनों के विरुद्ध मानते थे।

(ii) कृत्रिम उपायः माल्थस ने कुछ कृत्रिम उपायों एवं अन्य प्राकृतिक साधनों का भी उल्लेख किया है, जिनकी सहायता से जनसंख्या की वृद्धि पर रोक लगा सकते हैं। कृत्रिम उपायों की सहायता से सन्तानोत्पत्ति को बहुत कुछ कम कर सकते हैं। माल्थस ने कृत्रिम उपायों की अपेक्षा आत्म-संयम को ही प्रधानता प्रदान की है।

आलोचना

माल्थस के जनसंख्या सम्बन्धी निबन्ध को जहां एक ओर अत्यधिक मान्यता मिली वहीं दूसरी ओर उसकी कटु आलोचना भी की गई। माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त से हमारे सामने भविष्य का अन्ध कारमय चित्र उपस्थित होता है, लेकिन ऐसी बात नहीं है। यदि जनसंख्या में वृद्धि होती है, तो श्रमशक्ति में भी वृद्धि होती है, जिससे उत्पादन को मात्रा को बढ़ाया जा सकता है। यदि माल्थस के अनुसार निराशावादी दृष्टिकोण को अपना लिया जाये, तो मानवीय प्रयास ही समाप्त हो जाएगा

माल्थस के विचारों की आलोचनाओं की ओर संकेत करते हुए एलैक्जेन्डर ग्रे ने लिखा है- 'यह बात आसानी से कही जा सकती है कि अभी तक किसी भी व्यक्ति को इतना बदनाम नहीं किया गया है और न आलोचना ही की गई है जितनी माल्थस की।' प्रथम श्रेणी के लेखकों में माल्थस के बराबर किसी अन्य की इतनी कटु आलोचना नहीं की गई।

 आलोचकों ने माल्थस द्वारा प्रतिपादित इस विचार को कि जनसंख्या ज्यामितिक अनुपात से बढ़ती है गलत बताया है। उनका यह कहना है कि माल्थस अत्यंत निराशावादी हैं और अपनी निराशावादिता के कारण ही उसने शिक्षा एवं दूरदर्शिता सम्बन्धी उन्नति की ओर ध्यान नहीं दिया है। आज के युग में शिक्षा, वैज्ञानिक अनुसंधान तथा जीवन-स्तर ने अनेक देशों की जनसंख्या को रोकने में पर्याप्त योगदान किया है। मोसबर्ट का कथन है कि आरामदायक वस्तुएं एवं मनुष्य की

समृद्धि जनसंख्या को रोकने का अच्छा कार्य करती है।

2. प्रो. माल्थस का यह कहना कि प्रत्येक प्राणी अपनी जनसंख्या में असीमित मात्रा में वृद्धि करना चाहता है ठीक नहीं है। हक्सले के अनुसार यदि हरी मक्खी के एक जोड़े की सभी सन्तान जीवित रहें तो एक ग्रीष्म ऋतु के बाद ही उस हरी मक्खी की सन्तान का भर समस्त चीन की जनसंख्या से अधिक होगा। परन्तु ऐसा नहीं हो पाता है, क्योंकि जिन प्राणियों की संख्या में जितनी तीव्र गति से वृद्धि होती है। उनकी उतनी ही तीव्र गति से मृत्यु होती है। एडम स्मिथ ने लिखा है कि स्विट्जरलैंड में निर्धन पड़ी स्त्रियों के प्राय: 20 तक बच्चे होते थे परन्तु उनमें से अधिक से अधिक दो बच्चे ही युवावस्था को प्राप्त कर पाते थे।

3. आलोचकों के अनुसार माल्थस की यह धारणा कि जीवन-निर्वाह के साधन गणितीय अनुपात में बढ़ते हैं ठीक नहीं है। आलोचकों ने बताया कि खाद्य-सामग्री के अंतर्गत वनस्पति के साथ-साथ जीव-जंतु भी आते हैं। माल्थस ने अपने साधनों में केवल खाद्यान्नों को ही शामिल किया है। आलोचकों ने बताया कि आधुनिक युग में अनेक देश में इस गणितीय अनुपात से अधिक मात्र में खाद्य सामग्री उत्पन्न की जा रही हैं और जिन देशों में ऐसा नहीं हो रहा है वे विज्ञान की नवीन रीतियों ओर यंत्रें की सहायता से अधिक मात्र में सामग्री उत्पन्न करने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। आधुनिक युग में कृषि विज्ञान इतनी तीव्रता से विकसित हो रहा है कि माल्थस का खाद्य-सामग्री में प्रयुक्त होने वाला गणितीय अनुपात पूर्णरूपेण झुठा पड गया है।

4. प्रो. केनन का कथन है कि जनसंख्या और खाद्य-सामग्री में कोई सीधा सम्बंध नहीं है। अपनी बात की पुष्टि के लिए उन्होंने इंगलैंड का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वहां पर केवल 1/6 जनसंख्या के भरण-पोषण के लायक खाद्यान्न उत्पन्न किया जाता है फिर भी वहां माल्थस के द्वारा बताये गये प्रकृति के प्रकोपों को नहीं पाया गया है। कारण स्पष्ट है कि इंगलैंड अपने कारखानों में तैयार माल बड़ी मात्र में विदेशी बाजार में बेचता है और वहां से बदले में अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए खाद्य-सामग्री आयात करता है।

प्रो. केनन का यह कथन है कि माल्थस ने केवल यही विचार किया है कि बच्चा इस संसार में मुंह लेकर ही आता है। वे यह भुल गये हैं कि बच्चा अपने मुंह के साथ ही साथ काम

भूगोल (वैकल्पिक विषय) बार सचिन अरोड़ा

जनसंख्या भूगोल (Population Geography)

करने के लिए दो हाथ भी लाता है। अपने हाथों द्वारा वह इस मात्रा को उत्पन्न करेगा जो समाज उसके पालन-पोषण में व्यय करेगा।

- 5. आलोचकों का कहना है कि माल्थस काम वासना की इच्छा और प्रजनन इच्छा के अन्तर को भली प्रकार नहीं समझ पाये हैं। कामेच्छा एक स्वाभाविक एवं प्राकृतिक इच्छा है जो कि प्रत्येक मनुष्य में आवश्यक रूप से पायी जाती है, परन्तु दूसरी ओर संतान को जन्म देने की इच्छा सामाजिक एवं धार्मिक है। प्रथम प्रकार की इच्छा उग्र होती है जिसे रोकना मनुष्य के सामर्थ्य से बिल्कुल बाहर है परन्तु प्रजनन की इच्छा पर कृत्रिम साधनों द्वारा रोक लगाकर जनसंख्या की वृद्धि में प्रतिबंध लगाया जा सकता है।
- 6. आलोचकों का आरोप है कि माल्थस का सिद्धांत जनसंख्या की वृद्धि का उत्तरदायित्व निर्धन पर थोपना चाहता है। मार्क्सवादी भी इस आलोचना के समर्थक हैं। उनका कथन है कि माल्थस ने निर्धनता को ही जनसंख्या वृद्धि का कारण बताया। माल्थस का कहना था कि निर्धन व्यक्तियों को विवाह नहीं करना चाहिए। प्रो. माल्थस के विचार में विवाह से जनसंख्या में वृद्धि होगी जिसके परिणामस्वरूप बेरोजगारी बढ़ेगी। यह बात ठीक है कि मनोरंजन के साधनों के अभाव,

शिक्षा एवं दूरदर्शिता के अभाव में यह सब संभव होगा। आलोचकों का कहना है कि अधिक जनसंख्या का होना निर्धनता का मुख्य कारण नहीं है। बल्कि निर्धनता धन के असमान वितरण एवं सरकार की नीति का परिणाम है। यदि श्रमिकों को उचित पुरस्कार मिले तथा उनके मनोरंजन, शिक्षा आदि की ठीक व्यवस्था हो तब इस प्रकार के परिणाम होने की संभावना नहीं रहेगी।

अर्थशास्त्री **कर्वे** का कहना है कि जैसे-जैसे जीवन-स्तर ऊंचा उठता जाता है जनसंख्या पर जल्दी या देर से प्रतिबन्ध लगता है और मनुष्य अपने आनन्द की मात्रा बढ़ाने के लिए अपनी संतान की मात्रा कम कर देते हैं।

7. जिन आत्म-संयम और नैतिकता के बन्धनों का माल्थस ने उल्लेख किया है वे प्रभावी नहीं होते हैं। उनको अपनाने से मनुष्य को परेशानी होती है जिससे उनका व्यवहार सामान्य नहीं रहता है। इन नियमों को अपनाना अत्यंत दुष्कर कार्य है तथा एक सामान्य व्यक्ति की सामर्थ्य से बाहर है। सैद्धांतिक दृष्टिकोण से ये प्रतिबन्ध आदर्श प्रतीत होते हैं परन्त व्यवहार में संभव नहीं है।

8. आलोचकों का कहना है कि प्रो. माल्थस द्वारा कृषि उत्पादन में क्रियाशीलता होने वाले उत्पत्ति ह्वास नियम की कल्पना भी उचित नहीं है। श्रम एवं पूंजी की अतिरिक्त इकाइयों को लगाये जाने से सामान्य से अधिक मात्र में खाद्य-सामग्री पैदा की जा सकती है। कृषि के उन्नत साधनों ने कृषि उत्पादन में आश्चर्यजनक प्रगति कर दिखाई है।

उपरोक्त आलोचकों के आधार पर कहा जा सकता है कि माल्थस द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों में कुछ त्रुटियां अवश्य रह गई हैं जिनके कारण इस सिद्धांत को समझने में कुछ भ्रांतियां उत्पन्न हो गई है।

अतिजनसंख्या के विरुद्ध नव-माल्थुसियन विचार और तर्क

अधिक जनसंख्या यह विचार है कि पृथ्वी की जनसंख्या को बनाए रखने के लिए पृथ्वी पर पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। इस विचार की कुंजी यह है कि कुछ मानवीय जरूरतें हैं जिन्हें पूरा किया जाना चाहिए, और इन जरूरतों को पूरा करने के लिए सीमित संसाधन हैं। आप देख सकते हैं कि माल्थस द्वारा उपयोग किए जाने वाले कई विचार और भाषा आज प्रेस में सुनी जाने वाली जनसंख्या, भोजन और गरीबी की चर्चाओं से मेल खाते हैं।

1960 और 1970 के दशक में पॉल एर्लिच के द पॉपुलेशन बम के प्रकाशन के साथ माल्थस के विचारों में नए सिरे से रुचि बढ़ी, जिसने माल्थस की भविष्यवाणी पर दोबारा गौर किया कि अधिक जनसंख्या खाद्य उत्पादन से आगे निकल जाएगी, जिसके परिणामस्वरूप तबाही होगी। इन कार्यों में प्रस्तुत विचार संसाधनों को सीमित मानते हैं। यह दृष्टिकोण संसाधनों की कमी की चर्चा को जन्म देता है, क्योंकि यह मानता है कि संसाधनों का उत्पादन या आपूर्ति करने की प्रकृति की क्षमता की सीमाएँ हैं। कई विद्वानों ने इन विचारों पर आपत्ति जताई है, विशेष रूप से यह इंगित करते हुए कि मानव की जरूरतें कई रूपों में पूरी हो सकती हैं, जरूरतें सामाजिक दबावों का एक उत्पाद हो सकती हैं , और मानवीय सरलता और तकनीकी सुधारों ने हमें अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के तरीके अपनाने में मदद की है। मनुष्य प्राकृतिक पर्यावरण पर सिर्फ परजीवी नहीं हैं। यह मानसिकता इस बात का हिसाब लगाने में विफल रहती है कि मनुष्य उत्पादन बढ़ाने के लिए पर्यावरण को किस प्रकार संशोधित करता है। अधिक जनसंख्या के तर्कों में बहुत अधिक बच्चे पैदा करने के लिए गरीबों को दोषी ठहराया जाता है और अमीरों द्वारा अत्यधिक उपभोग पर विचार नहीं किया जाता है जो कि औपनिवेशिक शासन संरचनाओं द्वारा संचालित होता है।

प्रभाव-जनसंख्या संपन्नता-प्रौद्योगिकी (आईपीएटी) समीकरण का उपयोग यह उजागर करने के लिए किया जाता है कि केवल जनसंख्या ही मायने नहीं रखती, बल्कि समृद्धि या उपभोग और प्रौद्योगिकी भी मायने रखती है। समीकरण तीन कारकों की पहचान करता है जो पर्यावरणीय प्रभावों (I) में योगदान करते हैं: जनसंख्या (P), समृद्धि/उपभोग (A), और प्रौद्योगिकी (T)। आमतौर पर, समीकरण को नीचे दी गई छवि में दिखाए अनुसार व्यक्त किया जाता है।



जनसंख्या भूगोल (Population Geography)

The IPAT Equation: The IPAT equation is a widely used simplification of the factors causing environmental degradation. The equation is $I = P \times A \times T$. This is short for environmental Impact = Population × Affluence (consumption per person) × Technology (impact per unit of consumption). It's crucial to remember that the three factors are intermediate causes, not root causes.



कार्ल मार्क्स का जनसंख्या सिद्धांत

कार्ल मार्क्स एक सामाजिक वैज्ञानिक के रूप में विख्यात थे। उनका जनसंख्या का समाजवादी सिद्धांत जनसंख्या के सिद्धांत को प्रदर्शित करती है। मार्क्स ने माल्थस के जनसंख्या के सिद्धांत पर आलोचनात्मक प्रहार किया था। उन्होंने माल्थस की रचना को न गंभीरता से अध्ययन किया था न वे इस प्रकार के दकियानूसी विचारों से सहमत हुए कि मनुष्य की संख्या रेखा गणितीय दर से बढ़ती है तब प्रकृति से संतुलन बनाना चाहती है। उनका परिणाम श्रमशक्ति द्वारा परिश्रम कर अपनी आवश्यकता से अधिक उत्पादन कर देना है। मेहनतकश जनता ही, पूंजीपतियों की पूंजी बढ़ाकर अपने आपको अधिशेष / अतिरिक्त की श्रेणी में ले आती है, यही पूंजीवादी जनसंख्या सिद्धांत है।

"It is the working Population which, while effecting the accumulation of capital also produces the means whereby it is itself rendered relatively superfluous, is turned into a relatively surplus population and it does so to an ever increasing entent."

मार्क्स के विचार (Views of Mark)

- मार्क्स का विचार है कि अतिरिक्त जनसंख्या तथा रोजगार पूंजीवादी व्यवस्था का परिणाम है जो कि सभी को रोजगार देने में असमर्थ है।
 - (a) पूंजीवादी युग एक व्यवस्था के अंतर्गत है जहां धन और पूंजी का संग्रहण कुछ व्यक्तियों के हाथ में रहता है। मजदरों की जनसंख्या में वृद्धि के कारण श्रमिकों की

मांगें असफल होती हैं, जिसके फलस्वरूप बेरोजगारी अधिक बढ़ जाती है।

- (b) पूंजीवादी व्यवस्था में अमिकों को अमिक भत्ता उनकी शक्ति के अनुरूप नहीं मिलता है तथा अतिरिक्त मुनाफे को पूंजीपति अपने हाथ में "पूंजी संचय" रखता है।
- (c) पूंजीपति श्रमिक लागत बचत के लिए मशीन का उपयोग करते हैं जिससे अतिरिक्त आय में वृद्धि होती है। पूंजी के संचय से बेरोजगारी वृद्धि, भत्ता में कमी तथा गरीबी बढ़ती है। गरीबी तथा बेरोजगारी के कारण अतिरिक्त जनसंख्या पैदा होती है।
- मार्क्स ने इसका पूरी तरह विरोध किया कि जनसंख्या में वृद्धि अदूरदर्शिता तथा जैविक कारक के कारण होता है।
- मार्क्स ने उल्लेख किया कि खाद्यान्न का अल्प उत्पादन भूमि के वितरण में असमानता, जमींदारी व्यवस्था, कृषि योग्य भूमि की कमी तथा उपजाऊ भूमि में अनिश्चितता के कारण होता है।
- 4. मार्क्स का विश्वास है कि सर्वहारा आर्थिक उत्पादन की धुरी में सहायता देता है तथा पूंजीपति के लाभ में वृद्धि करता है जबकि वह शोषण का स्रोत है। पूंजीपति खून पीने वाले प्रेत हैं जो गरीब श्रमिकों के खून पर जीवित रहता है और उसके खून से अधिक धनवान होता जाता है।

जनांकिकी संक्रमण के सिद्धांत (Theory of DemographicTransition)

यह जनसंख्या के विकास का आधुनिकतम सिद्धांत है जिसे विश्व के अधिकांश अर्थशास्त्रियों व जनसंख्यांशास्त्रियों का समर्थन मिला है। यह सिद्धांत यूरोप के अनेक देशों के आंकड़ों पर आध ारित है। यह सरल है, तर्क-संगतहै तथा सभी सिद्धांतों में सर्वाधि क वैज्ञानिक प्रतीत होता है। वर्तमान जनसंख्याशास्त्रियों का मत है कि प्रत्येक समाज की जनसंख्या को अनेकअवस्थाओं सेगुजरना होताहै। प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषता होती है। विश्व का कोई देश प्रथम अवस्था में है तो कोई द्वितीय-तृतीय आदि में। भिन्न-भिन्न विचारकों ने अवस्थाओं को भिन्न-भिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया है। सी-पी- ब्लैकर ने पांच अवस्थाओं को बताया है जबकि थोम्पसन, नोटेस्ट्रीन एवं बोरा ने तीन अवस्थाओं में वर्गीकृत किया है। कुछ विद्वानों के विचार निम्न हैं-

- सी.पी. ब्लैकर के विचारः सी.पी. ब्लैकर ने पांच अवस्थाओं का विचार दिया है।
 - (i) प्रथम अवस्था: उच्चस्थिर अवस्था- इस अवस्था में जन्म-दर एवं मृत्यु-दर दोनों अधिक होती है। सन् 1930 से पूर्व भारत और चीन की यही स्थिति थी।

भूगोल (वैकल्पिक विषय) बग सचिन अरोड़ा

जनसंख्या भूगोल (Population Geography)

- (ii) द्वितीय अवस्था: तीव्र वृद्धि काल-जब जन्म दर नहीं घटी हो किन्तु मृत्यु दर में तीव्र दर से कमी हो जाने से शुद्ध वृद्धि की दर बहुत अधिक हो। वर्तमान समय में भारत, चीन, पाकिस्तान, इण्डोनेशिया, बर्मा, लंका आदि देश इसी अवस्था में हैं।
- (iii) तृतीय अवस्थाः शनै: शनै: वृद्धि का काल-इस अवस्था में मृत्युदर के घटने के बाद जन्म दर घटने लगती है। किन्तु जन्म-दर उतनी नहीं घटती जितनी कि मृत्यु दर घट जाती है। जापान, चीली, कनाडा, रूस आदि देश इसी अवस्था में हैं।
- (iv) चतुर्थ अवस्थाः नीची स्थिरता की अवस्था- इस अवस्था में मृत्यु दर अपनी न्यूनतम स्थिति में होती है। किन्तु जन्म दर घटते-घटते ऐसी स्थिति में आ गयी है कि प्रजनन आयु वर्ग की स्त्रियां केवल अपनी संख्या के बराबर लड़कियों को जन्म देती हैं। अत: जनसंख्या प्रतिस्थापित तो होती रहती है परन्तु न बढ़ती है और न घटती है।
- (v) पंचम अवस्थाः घटती जनसंख्या- जब जन्म दर घटते-घटते मृत्यु दर से भी कम हो जाये तो शुद्ध-वृद्धि दर ऋणात्मक हो जाती है। फ्रांस की यही स्थिति है।



- A = उच्चस्थिरता
- A = C = तीव्र वृद्धि
- B C = शनै: शनै: वृद्धि
- C =निम्नस्थिरता
- C D =घटती जनसंख्या
- टॉम्पसन एवं नोटेस्ट्रीन (Thompson and Notestrein) के विचार: इनका विचार है कि प्रथम और पांचवीं अवस्थाएं असाधारण हैं, न तो जनसंख्या उच्च स्तर पर स्थिर होती है और न घटती दर में होती है। केवल इनकी तीन व्यावहारिक अवस्थाएं हैं-
 - (i) जन्म-दर अधिक है किन्तु मृत्यु-दर घट जाने से जनसंख्या तीव्र दर से बढ़ रही है।
 - (ii) जन्म-दर भी मृत्यु-दर के साथ घट रही है। किन्तु मृत्यु-दर अधिक घटी है, जन्म-दर कम। अत: जनसंख्या

बढ़ तो रही है, किन्तु बढ़ना दर धीमी है।

- (iii) जन्म व मृत्यु-दर दोनों घट चुकी है, जनसंख्या लगभग स्थिर है।
- 3. टॉम्पसन एवं नोटेस्ट्रीन ने इन अवस्थाओं को चार चरणों में विभाजित किया है। प्रथम अवस्था में जन्म व मृत्यु दोनों दरें अधिक हैं- द्वितीय अवस्था में जन्म-दर प्रथम अवस्था की भांति ऊंची हैं किन्तु मृत्यु-दर घट गयी है- तृतीय अवस्था में दोनों दरें घटकर फिर करीब-करीब समान हो गयी हैं। इन चार अवस्थाओं को निम्न रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है।



प्रथम अवस्था पिछड़े देश को निर्देशित करती है जहां जन्म-दर ऊंची होती है तथा मृत्यु-दर भी ऊंची होती है। इसमें आय का प्रमुख स्रोत एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था है। द्वितीयक उद्योग जैसे-बीमा, बैंक आदि नहीं है। प्रति व्यक्ति आय कम है, अत: बच्चे आय बढ़ाने के स्रोत होने के उत्तरदायित्व नहीं बल्कि पूंजी हैं। कृषि में प्रत्येक उम्र के बच्चे के लिए काम निकल आता है। अत: छोटा बच्चा भी आय का स्रोत होता है। बच्चों के विकास, शिक्षा एवं स्वास्थ्य की कोई महत्वाकांक्षा ही नहीं होती; अत: उनमें व्यय नहीं होता। संयुक्त परिवार अवस्था होती है अत: लालन-पालन की कोई समस्या नहीं होती है। इन्हीं सब कारणों से प्रथम अवस्था में जन्म-दर ऊंची होती है तथा मृत्यु-दर भी ऊंची होती है।

द्वितीय अवस्था में अर्थव्यवस्था आर्थिक विकास की ओर अग्रसर होती है। कृषि के साथ उद्योग भी बढ़ने लगते हैं। परिवहन व शहरीकरण होने से गतिशीलता बढ़ती है। शिक्षा का विस्तार, आय में वृद्धि, भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य, चिकित्सा में सुधार होने से मृत्यु-दर घटती है। किन्तु धर्मान्धता, रीति-रिवाज व रूढ़िवादिता के बन्धन ढीले नहीं होते हैं। जन्म-दर नहीं घटती है और जनसंख्या विस्फोट की स्थिति में आ जाती है।

तृतीय अवस्था में जीवन-स्तर में सुधार, मानसिक विकास, नारी शिक्षा, नारी रोजगार में वृद्धि और औरतों में जागृति जागती है। परिणामस्वरूप औरतें कम बच्चे पसन्द करने लगती हैं, सारे जीवन भर बच्चे खेलाने की अपेक्षा अन्य क्षेत्रें में सहयोग करना चाहती हैं- दूसरी ओर आर्थिक आकांक्षायें बढ़ती हैं, बच्चों की शिक्षा-दीक्षा अच्छी तरह की होड़ होने लगती है। शहरीकरण से आर्थिक कशमकश बढती है,



विश्व के सभी देश इन तीन अवस्थाओं से गुजरते हैं जिसमें अफ्रीका के कुछ देश प्रथम अवस्था में हैं तो एशिया के कुछ देश द्वितीय अवस्था में आ गये हैं तथा यूरोप के देश तृतीय अवस्था में हैं। निम्न चित्र के द्वारा तीनों अवस्थाओं को दिखाया जा सकता है।

चित्र से तीनों अवस्थाओं का पता चलता है। प्रथम अवस्था में जन्म-दर करीब 46 या 48 प्रति हजार है। लेकिन मृत्यु-दर भी इसके करीब-करीब बराबर है। अत: जनसंख्या धीरे-धीरे बढ़ती है। भारत में 1909 से 1921 तक बीस वर्षों में जनसंख्या में केवल 5. 44 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस प्रकार प्रतिवर्ष जनसंख्या विकास की दर 0.27 प्रतिशत रही। अत: भारत सन् 1901 से 1921 की अवधि में संक्रमण की प्रथम अवस्था में था। निम्न आंकड़ों से इसका पता चलता है कि

दशक	जन्म-दर	मृत्यु-दर	वृद्धि दर प्र	तिवर्ष
1901-11	49.2	42.6	0.66	
1911-21	48.1	47.2	0.09	
सन् 1921 से भा	रत जनसंख्य	॥ संक्रमण	की द्वितीय	अवस्थ

सन् 1921 स भारत जनसख्या सक्रमण का द्विताय अवस्था में है, जिसका स्पष्टीकरण जन्म-दर और मृत्यु-दर से अधिक है।

दशक	जन्म-दर	मृत्यु-दर	वृद्धि
1931-41	45.2	31.2	1.04
1941-51	39.9	27.4	1.25
1951-61	41.7	22.8	1.89
1961-71	39.1	17.0	2.21
1971-81	36.0	14.8	2.48

यह अवस्था जनसंख्या विस्फोट की अवस्था है। जिसमें जन्म-वृद्धि की दर अधिकतम होती है। भारत को तीसरी अवस्था में इस सदी के अंतिम वर्ष तक पहुंचने की आशा है।

10.2

2.46

32.6

आलोचना

1981-91

- यह सिद्धांत इन विभिन्न चरणों में कितना समय लगाता है-इस बात पर कोई प्रकाश नहीं डालता है।
- प्रथम अवस्था में जन्म-दर तो ऊंचे स्तर पर स्थिर होती है किन्तु मृत्यु-दर में प्राकृतिक प्रकोपों के कारण उच्चावचन होते रहते हैं। अत: जनसंख्या वृद्धि प्रथम अवस्था में भी परिवर्तनशील रहती है।
- यह सिद्धांत आर्थिक विकास के विभिन्न चरणों एवं जनांकिकी संक्रमण के चरणों के बीच किसी संबंध की चर्चा नहीं करता है। जबकि प्रो. लाइबेनिस्टन की धारणा है कि आर्थिक विकास के चरण एवं जनांकिकी संक्रमण की अवस्था साथ–साथ चलती है।
- यह सिद्धांत प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरण की व्याख्या तो करता है किन्तु चतुर्थ चरण के विषय में विद्वानों में मतभेद है, कुछ विद्वानों की धारणा है कि जनसंख्या चतुर्थ चरण में बढ़ती है तथा कुछ की धारणा है कि यह स्थिर रहती है, किन्तु कारण स्पष्ट नहीं किया गया है।
- आर्थिक विकास एवं जनांकिकी संक्रमण दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, केवल विकास के कारण संक्रमण नहीं होता है, बल्कि संक्रमण के कारण भी विकास होता है।

भूणोल (वैकल्पिक विषय) द्वारा सचिन अरोड़ा

जनसंख्या भूगोल (Population Geography)

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत (Optimum Theory of Population)

आदर्श जनसंख्या सिद्धांत अर्थशास्त्र के क्षेत्र में एक नवीन अध्याय है। निश्चित रूप से यह कहना संभव नहीं है कि इस सिद्धांत का प्रतिपादन किसने और किस रूप में किया। आर्थिक विचारों के इतिहास को देखने से पता चलता है कि सर्वप्रथम 1815 ई. में सर एडवर्ड वेस्ट (Sir Edward West) ने अपने निबन्ध (Essay on the Application of Capital to land) में इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये थे। उन्होंने अपने इस निबन्ध में बताया था कि जनसंख्या के साथ ही साथ श्रम में विशिष्टीकरण हो जाता है। सर एडवर्ड वेस्ट के द्वारा अभिव्यक्त किये जाने वाले विचारों को इस दिशा में एक संकेत मात्र ही माना जा सकता है। वास्तव में इस सिद्धांत की आधारशिला रखने का श्रेय प्रो. रिजवीक को है। प्रो. रिजवीक ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (Principle of Political Economy) में उत्पत्ति के नियमों का विस्तृत अध्यय किया तथा प्रतिपादित किया कि उत्पत्ति में एक ऐसा बिन्दु होता है जिस पर अधिकतम प्रतिफल प्राप्त होता है और यह उस समय होगा, जबकि एक उचित अनुमान में सब साधनों को उत्पादन में लगाया जायेगा। उन्होंने बताया कि यह तथ्य राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में भी उतना ही महत्वपूर्ण और सत्य है जितना कि व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में। यद्यपि प्रो. रिजवीक ने अपने विचारों के प्रस्तुतीकरण में आदर्श अथवा 'अनुकूलतम' शब्दों का प्रयोग नहीं किया है, तथापि इतना निश्चित है कि उनका मौलिक एवं आधारभूत आशय उसी ओर था; इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम प्रो. सर एडविन कैनन ने किया और उन्होंने अपने जनसंख्या सिद्धांत को आदर्श जनसंख्या के सिद्धांत के नाम से प्रस्तुत किया तथा उस<mark>की स</mark>विस्तार वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की। वर्तमान युग में 'आदर्श जनसंख्या' के सिद्धांत को लोकप्रिय बनाने का श्रेय तीन प्रमुख अर्थशास्त्रियों- प्रो. डाल्टन, प्रो. रोबिन्स और प्रो. सर सान्डर्स को है।

आदर्श जनसंख्या की परिभाषा

इस सिद्धांत की परिभाषा अनेक विद्वानों ने दी है जिनमें मुख्य निम्नलिखित हैं-

प्रो. **कार-सान्डर्स** ने लिखा है कि "आदर्श जनसंख्या वह है जिससे अधिकतम आर्थिक कल्याण की प्राप्ति होती है। अधि कतम आर्थिक कल्याण और अधिकतम प्रतिव्यक्ति आय समान नहीं है, परन्तु व्यावहारिक दृष्टिकोण से हम दोनों को समान मान सकते हैं।"

(The optimum population is that population which produces maximum economic welfare- Maximum economic welfare is not necessarily the same as mañimum real income per head but for preactical purpose, they may be taken as equivalent)

प्रो. कैनन ने कहा "एक दिये हुए समय में, अर्थात् ज्ञान तथा परिस्थितियां समान रहने पर, एक बिन्दु ऐसा होता है जहां पर कि अधिकतम उत्पादन प्राप्त होता है तथा इस स्थिति में श्रम की मात्र ऐसी होती है कि उसमें वृद्धि तथा कमी दोनों ही उपज में कम लाती है।"

प्रो. डाल्टन ने कहा "आदर्श जनसंख्या वह जनसंख्या है जो प्रति व्यक्ति अधिकतम आय देती है।"

(Optimum population is that which gives the mañimum income per head)

रॉबिन्स ने लिखा "वह जनसंख्या जिससे अधिकतम उत्पादन सम्भव होता है, आदर्श जनसंख्या कहलाती है।"

(The population which just makes the mañimum returns possible in the optimum or best possible population) हिक्स ने लिखा "अनुकूलतम जनसंख्या का वह स्तर है जिस पर प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिकतम होता है।"

बोल्डिंग ने परिभाषा देते हुए कहा कि वह जनसंख्या जिस पर जीवन-स्तर उच्चतम होता है सर्वोत्तम जनसंख्या कहलाती है। परिभाषाओं से स्पष्ट है कि भिन्न-भिन्न विचारकों ने आदर्श शब्द का प्रयोग भिन्न-भिन्न अर्थों में किया है, फिर भी इतना स्पष्ट है कि आदर्श जनसंख्या का सिद्धांत किसी देश की जनसंख्या के उसकी सर्वोत्तम अनुकूलता, आदर्श और सबसे अधिक वांछनीय आकार को प्रस्तुत करता है, जबकि देश की जनसंख्या न तो अधिक होती है और न कम होती है अपितु ठीक उतनी ही होती है जितनी कि राष्ट्रीय औसत आय को अधिकतम बनाने के लिए आवश्यक होता है। जनसंख्या का यह आदर्श उत्पादन के अन्य साधनों के साथ मिलकर प्रति व्यक्ति औसत आय को भी अधिकतम बना देता है।

आदर्श जनसंख्या सिद्धांत <mark>की</mark> व्याख्या

(Interpretation of Optimum Theory of Population) आदर्श जनसंख्या सिद्धांत को प्रस्तुत करने के लिए निम्नलिखित तालिका का उपयोग लिया गया है।

देश की कुल जनसंख्या (करोड़ में)	कुल वास्तविकता आय (सेवाओं और वस्तु के रूप में)	प्रति व्यक्ति आय
15	450	30
16	512	32
17	578	34
18	600	34
19	640	34
20	660	33
21	651	31

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि प्रारम्भ में जनसंख्या उस देश की प्राकृतिक साधन, उत्पादन प्रविधि और पूंजी की तुलना

भूशोल (वैकल्पिक विषय) द्वारा सचिन अरोड़ा

जनसंख्या भूगोल (Population Geography)

में कम थी। अतः ज्यों-ज्यों जनसंख्या में वृद्धि होती गई, त्यों-त्यों प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि होती गई। जनसंख्या के बढ़ते-बढ़ते एक ऐसी स्थिति आ जाती है जो कि देश के आर्थिक साधनों का प्रयोग करने के लिए चाहिए। इस सीमा पर प्रति व्यक्ति आय अधिकतम होती है। यदि इस सीमा के उपरान्त भी जनसंख्या में वृद्धि होती है, तब प्रति व्यक्ति आय कम होनी प्रारम्भ हो जाती है। तालिका के अनुसार, उस देश के लिए 18 करोड़ एक आदर्श जनसंख्या है, क्योंकि इतनी जनसंख्या होने पर प्रति व्यक्ति आय अधिकतम है। इस सीमा के बाद जनसंख्या की वृद्धि से प्रति व्यक्ति आय घट जाती है, ज्यों ही उस देश की जनसंख्या 18 करोड़ की सीमा से बढ़कर 19 करोड़ होती है त्यों ही प्रति व्यक्ति आय 35 से घटकर 34 रह जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि जनसंख्या की वृद्धि का प्रभाव व्यक्तियों की औसत आय को कम करता है।

Diagrammatic Representation of Optimum Theory: आदर्श जनसंख्या के सिद्धांत का चित्रांकन निम्नलिखित रूप से किया गया है।



उपर्युक्त चित्र द्वारा स्पष्ट होता है कि प्रथम स्थिति में जनसंख्या को वृद्धि के साथ-साथ प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि होती है। अनुकूलतम अवस्था पहुंचने पर प्रति व्यक्ति आय अधिकतम हो जाती है। इस बिन्दु को पार करने पर फिर जनसंख्या की वृद्धि के साथ-साथ प्रति व्यक्ति आय क्रमश: गिरने लगती है, क्योंकि आर्थिक साधनों पर जनसंख्या की अधिकता हो जाती है तथा उत्पत्ति ह्वास का नियम लागू हो जाता है।

प्रो. डाल्टन तथा प्रो. रॉबिन्स के विचारों की तुलना प्रो- डाल्टन ने आदर्श जनसंख्या के सिद्धांत को प्रति व्यक्ति आय से सम्बन्धित किया है। उनके अनुसार आदर्श जनसंख्या वह जनसंख्या है जो कि प्रति व्यक्ति अधिकतम आय देती है। इससे स्पष्ट होता है कि उन्होंने जनसंख्या पर प्रति व्यक्ति आय के दृष्टिकोण से विचार किया है। उन्होंने अपने विचारों की अभिव्यक्ति में व्यक्ति और आय को अधिक महत्व प्रदान किया है। अत: डाल्टन के अनुसार जनसंख्या, आदर्श बिन्दु पर पहुंची हुई तभी मानी जायेगी जब कि यह देश में प्राप्त प्राकृतिक साधनों, उत्पादन कला और पूंजी की सहायता के द्वारा प्रति व्यक्ति अधिकतम आय उपलब्ध कर सके। यदि जनसंख्या कम होगी तब निश्चय ही साध नों का यथोचित उपयोग नहीं हो सकेगा, क्योंकि ऐसी स्थिति में साधनों की इकाई से कम काम लिया जा सकेगा, जिनके परिणामस्वरूप औसत आय भी कम रहेगी। ठीक इसके विपरीत, यदि जनसंख्या आदर्श बिन्दु से अधिक होगी तब अन्य साधनों की प्रत्येक इकाई उत्पादन क्षेत्र में कम काम करेगी परिणामस्वरूप औसत आय भी कम हो जायेगी।

रॉबिन्स ने आदर्श जनसंख्या के सिद्धांत के प्रतिपादन में डाल्टन से भिन्न दृष्टिकोण अपनाया है। उनके अनुसार, वह जनसंख्या जिससे अधिकतम उत्पादन संभव होता है, आदर्श जनसंख्या कहलाती है। (he population which makes the mañimum returns possible is the optimum or best population) कहने का अर्थ यह है कि प्रो. रोबिन्स ने अधिकतम कुल उत्पादन को विशेष महत्व दिया है। उनका दुष्टिकोण सामाजिक है, क्योंकि प्रति व्यक्ति औसत आय के स्थान पर वह सामाजिक उत्पादन को महत्व देते हैं। उनके अनुसार जनसंख्या में वृद्धि होते रहना उस सीमा तक उचित है जिस सीमा तक कुल उत्पादन में वृद्धि होती है। ऐसी स्थिति में यह भी संभव है कि प्रति व्यक्ति आय अधिकतम न हो रही हो। रोबिन्स का कथन है कि आदर्श जनसंख्या तभी होगी जब प्रत्येक व्यक्ति को जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक आय प्राप्त होती है। दूसरे शब्दों में, रोबिन्स के इस विचार को इस प्रकार भी प्रस्तुत किया जा सकता है कि किसी देश की जनसंख्या की उस सीमा तक वृद्धि प्राप्त करते रहना हितकर है जब तक कि प्रति व्यक्ति आय जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक आय के बराबर नहीं हो जाती। रॉबिन्स का विचार है कि जब तक देश का प्रत्येक व्यक्ति नौकरी एवं लाभदायक उद्योगों में लगा हुआ है अर्थात् जब तक कि वह व्यक्ति समाज के लिए उतना उत्पादन करने में सहायता देता है, जितना कि समाज के इस व्यक्ति के भरण-पोषण पर व्यय करना पडता है, तब तक देश में जनसंख्या की वृद्धि से कोई भय नहीं है।

डाल्टन एवं रॉबिन्स के दृष्टिकोण में अंतर

डाल्टन और रॉबिन्स की परिभाषाओं का विश्लेषण करने से पता चलता है कि उनमें मौलिक अन्तर है

- (i) रॉबिन्स की इष्टतम जनसंख्या डाल्टन से अधिक है; क्योंकि जहां डाल्टन के इष्टम बिन्दु का निर्धारण प्रति व्यक्ति आय से होता है वहां रॉबिन्स की इष्टतम बिन्दु कुल उत्पादन में निर्धारित होता है।
- (ii) जहां डाल्टन के विश्लेषण में केवल उत्पादन की मात्र नहीं बल्कि उसके वितरण को भी महत्वपूर्ण तत्व माना गया है वहां रॉबिन्स के विश्लेषण में केवल राष्ट्रीय आय की मात्र को ही महत्वपूर्ण तत्व माना गया है और आय के वितरण की उपेक्षा की गई है।

भूशोल (वैकल्पिक विषय) बग सचिन अरोड़ा

जनसंख्या भूगोल (Population Geography)

(iii) रॉबिन्स का विश्लेषण सैद्धांतिक प्रतीत होता है क्योंकि उन्होंने औसत सामाजिक उत्पादन की चर्चा की है। यदि देश में प्रत्येक व्यक्ति पर्याप्त आय कमा रहा है तो समझना चाहिए कि अभी अतिवास का कोई भय नहीं है।

आदर्श जनसंख्या सिद्धांत की आलोचना

इस सिद्धांत के कुछ गुणों के साथ-साथ इनमें कुछ कमियां भी पाई जाती हैं जिनके कारण सिद्धांत की व्यावहारिकता में बहुत कमी आ गई। इसलि इस सिद्धांत की कुछ आलोचनाएं की गई हैं जो निम्नलिखित हैं-

- आदर्श जनसंख्या सिद्धांत मात्र यही निर्देश देता है कि किसी विशेष समय पर किसी देश की जनसंख्या क्या है? अर्थात् यह है कि वह जनसंख्या आदर्श है, आदर्श से कम है अथवा आदर्श से अधिक है। परन्तु इस क्षेत्र में कोई प्रकाश नहीं डालता है कि उस देश की जनसंख्या में वृद्धि क्यों और कैसे हो गई है। इस आधार पर आलोचकों का कहना है कि इसे जनसंख्या सिद्धांत बताना ही उचित नहीं है।
- 2. आदर्श जनसंख्या सिद्धांत में केवल अधिकतम उत्पादन को महत्व दिया गया है परन्तु प्राप्त होने वाले राष्ट्रीय लाभांश के वितरण पर प्रकाश नहीं डाला गया है। राष्ट्रीय लाभांश के वितरण की समस्या भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी उत्पादन की। कल्याण और आय का गहरा सम्बन्ध होना चाहिए। ऐसी स्थिति भी हो सकती है कि प्रति व्यक्ति आय बढ़ रही हो, परन्तु प्रति व्यक्ति कल्याण न हो रहा हो। ऐसी स्थिति वितरण के दोषपूर्ण होने पर उपस्थित होगी। राष्ट्रीय आय का यदि एक बड़ा भाग कुछ ही व्यक्तियों के हाथों में जाता रहेगा तब देश में गरीबी बढ़ती रहेगी, जबकि औसत प्रति व्यक्ति आय बढ़ती हुई प्रतीत होगी। ऐसी दशा में जनसंख्या की वृद्धि को अच्छा नहीं माना जाना चाहिए।

3. आदर्श-जनसंख्या सिद्धांत इस कल्पना को अपनाता है कि आर्थिक वातावरण में परिवर्तन नहीं होता अर्थात मनुष्यों की आदतों एवं रूचियों और टेकनिकल ज्ञान के स्तर पूर्ववत् ही बने रहते हैं और मात्र जनसंख्या में धीरे-धीरे परिवर्तन हुआ करता है। प्रो. क्लार्क द्वारा बताये गये पांच परिवर्तन-जनसंख्या में वृद्धि, पूंजी में निरन्तर वृद्धि, औद्योगिक संगठनों में परिवर्तन, उत्पत्ति की पद्धतियों में परिवर्तन और उपभोक्ता की आवश्यकताओं में वृद्धि-निरन्तर होते रहते हैं। अत: किसी विशेष जनसंख्या को आदर्श कहना उचित नहीं है। 4. आदर्श जनसंख्या सिद्धांत का यह भी दोष है कि उसने एक संकीर्ण भौतिकवादी को अपनाया है इसमें धन को विशेष महत्व दिया गया है। इस सिद्धांत के समर्थकों का कहना है कि प्रति व्यक्ति आय अधिकतम बनी रहनी चाहिए। उसके अनुसार अधिकतम आय ही प्रगति का चिन्ह है। जबकि व्यक्ति का लक्ष्य 'धन' नहीं बल्कि सुख की प्राप्ति है। धन स्वयं साध्य नहीं एक साधन मात्र ही है। धन की आवश्यकता भी इसलिए होती है कि व्यक्ति उसका प्रयोग सुख प्राप्ति के लिए कर सके। सुख एक व्यापक धार<mark>ण</mark>ा है जिसकी निर्भरता

'धन' के अतिरिक्त अन्य कारणों पर भी हो सकती हैं 5. आदर्श जनसंख्या सिद्धांत के अनुसार जनसंख्या का निर्णय प्रति व्यक्ति आय के आधार पर किया जाता है। इस विचारधारा के प्रतिपादन में राष्ट्रीय उद्देश्यों को महत्व प्रदान नहीं किया गया है। यह संभावना की जा सकती है जो स्थिति आर्थिक दृष्टि से उचित प्रतीत हो वह उस देश की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति के अनुरूप न हो। इस दृष्टिकोण से आदर्श जनसंख्या सिद्धांत में अभाव है।

उपयोक्त दोषों के आधार पर कहा जा सकता है कि आदर्श जनसंख्या सैद्धांतिक रूप से श्रेष्ठ होने पर भी इसमें व्यावहारिकता नहीं है।

आदर्श जनसंख्या सिद्धांत का महत्व

जनांकिकी अध्ययन में काफी समय तक आदर्श जनसंख्या सिद्धांत को माल्थस के सिद्धांत का प्रतिस्थापित सिद्धांत समझा जाता रहा। लेकिन माल्थस का सिद्धांत जहां जनसंख्या वृद्धि के बारे में बतलाता है, वहां यह सिद्धांत नीति सम्बन्धी एक आदर्श प्रस्तुत करता है। फिर भी तुलना के दुष्टिकोण से माल्थस एवं अनुकुलतम जनसंख्या सिद्धांत की तुलना की जा सकती है।

	माल्थस सिद्धांत	अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत	
1.	माल्थस के सिद्धांत में जनसंख्या को केवल खाद्यपूर्ति से ही सम्बन्धित किया गया है।	आदर्श जनसंख्या में प्राकृतिक साधन, उनका प्रयोग, तकनीक, उत्पत्ति के नियम एवं राष्ट्रीय आय सभी को सम्बन्धित किया गया है।	
2.	माल्थस के सिद्धांत में जनसंख्या वृद्धि हानिकारक मानी गयी है।, वह हमेशा लागू करती है।	आदर्श जनसंख्या के अनुसार जनसंख्या वृद्धि उसी समय हानिकारक होगी जबकि वह अनुकूलतम बिन्दु से ऊपर है।	
3.	माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि को कभी भी लाभदायक नहीं माना।	आदर्श जनसंख्या में जनसंख्या वृद्धि को उस स्थिति में लाभदायक भी माना गया है जबकि वह फ्बाह्य वातावरणय् के इस प्रकार के प्रयोग को प्रोत्साहित करे कि प्रति व्यक्ति आय व कल्याण बढ़े।	
4.	माल्थस का सिद्धांत जनसंख्या वृद्धि का सिद्धांत है, इसलिए इसे जनसंख्या सिद्धांत मानते हैं।	आदर्श जनसंख्या का सिद्धांत वास्तव में जनसंख्या का सिद्धांत नहीं है बल्कि नीति एवं आदर्श प्रस्तुत करता है।	

भूगोल (वैकल्पिक विषय) बार सचिन अरोड़ा

जनसंख्या भूगोल (Population Geography)

 माल्थस का सिद्धांत केवल संख्यात्मक विश्लेषण है। उसमें जनसंख्या के गुणात्मक पहलुओं की ओर ध्यान नहीं दिया गया। माल्थस का सिद्धांत तथा निराशाजनक कहा जा सकता है। आदर्श जनसंख्या सिद्धांत में जनसंख्या के इन दोनों मुद्दों पर ध्यान दिया गया है। आदर्श जनसंख्या का सिद्धांत सर्वथा आशावादी है।

जनसंख्या का सामाजिक-आर्थिक सिद्धांत (Socio-economic Theory of Population)

बहुत से विद्वानों ने समाजशास्त्र के क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि के प्रति अपना विचार दिया है। कुछ विद्वानों के विचार निम्न हैं-

हेनरी जार्ज (Henry George): हेनरी जार्ज एक अमेरिकी अर्थशास्त्री और समाज सुधारक थे। इनकी पुस्तक "Progress and Prosperity" 1879 में प्रकाशित हुई। यह एक कर प्रणाली के समर्थक के रूप में जाने जाते थे, उनकी धारणा थी कि प्रकृति एवं जनसंख्या में कोई परस्पर विरोध नहीं है तथा जनसंख्या बढ़ने से खाद्यपूर्ति बढ़ती है। शर्त यह है कि प्राकृतिक साधनों पर कुछ व्यक्तियों का एकाधिकार नहीं रहे। उन्हीं के शब्दों में-

"जनसंख्या का नियम मानव जाति के बौद्धिक विकास के नियम से सम्बन्धित रहता है। यह डर कि विश्व में व्यक्ति जन्म लेते रहेंगे तो प्रकृति के कृपण होने के कारण खाद्यान्न नहीं बढ़ पायेंगे, अत: जीवनयापन संभव नहीं हो सकेगा, उचित नहीं है। यदि इस प्रकार की कोई स्थिति है तो उसके लिए प्रकृति नहीं, बल्कि सामाजिक अव्यवस्था जिम्मेवार है।"

"In other words, the law of population accords with and is subordinate to the law of intellectual developments, and any danger that human beings may be brought into a world where they can not be provided for, arises not from the ordinances of nature, but from social maladjustments that in the midst of wealth condemn men to want"

यद्यपि हेनरी जार्ज भी स्पेन्सर की इस विचारधारा के समर्थक हैं कि बौद्धिक विकास के साथ सन्तानोत्पादकता घट जाती है किन्तु वे भूमि व्यवस्था में सुधार एवं जमींदारी उन्मूलन को समस्या का हल मानते हैं।

आरसेन डुमॉन्ट (Arsene Dumont): आरसेन डूमॉन्ट ने जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन किया और अपने सिद्धांत को सामाजिक उन्नति से संबंधित किया। इन्होंने अपने विचारों का आधार 19वीं शताब्दी की फ्रांस की जनसंख्या के विकास को बनाया। जैसे व्यक्ति समाज की सीढ़ियां चढ़ता जाता है। उसकी सन्तानोत्पादकता घटती जाती है। भौतिक जगत में जो महत्व गुरुत्वाकर्षण का है वही सामाजिक जगत में उन्नति को चाह का है।

What gravity is to the physical world, capilarity is to the social order— the development of members in a nation is in inverse ratio to the development of the individual.

किसी देश में जनसंख्या की वृद्धि का जनसंख्या की प्रगति के साथ विपरीत सम्बन्ध होता है। जिस क्षण से मनुष्य के आचरण में विवेकपूर्ण चिन्तन तथा किसी लक्ष्य के प्रति आकर्षण प्रारंभ हो जाता है उसकी वृद्धि की दर घटनी शुरू हो जाती है, जैसे किसी तरल पदार्थ को ऊपर चढ़ने के लिए पतला होना चाहिए, उसी प्रकार समाज में ऊपर उठने के लिए परिवार का आकार छोटा होना चाहिए।

डुमान्ट का विचार है कि इस प्रकार के देश में, जैसे भारत, जाति-व्यवस्था के कारण सामाजिक उन्नति अपेक्षाकृत धीमी है तथा जन्म दर इस अनुपात में उच्च है, सामाजिक संरचना की कठोरता के कारण सामाजिक विकास आन्दोलन में बाधा आती है। व्यक्तिगत विकास इस प्रकार के वातावरण से आगे नहीं बढ़ सकेगा। **फ्रेंक फेल्टर (Frank Felter):** फ्रेंक फेल्टर एक अर्थशास्त्री और सामाजिक विचारक थे। उन्होंने स्वैच्छिक सिद्धांत का प्रतिपादन किया। वह माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत से असहमत थे जो कि एकपक्षीय है। उसने कहा कि विश्व के बहुत से समाज हैं, जहां बच्चे या अधिक आयु के लोगों की मृत्यु खाद्यान्म की न्यूनता या स्वास्थ्य परिणाम से नहीं होती है। फेल्टर ने मृत्यु दर को प्रभावित करने वाले दूसरे कारकों को ढूंढने का प्रयत्न किया है। फेल्टर के सिद्धांत की रूपरेखा निम्म है–

मानव अपनी जन्म दर की वृद्धि बुद्धि एवं सामान्य ज्ञान के द्वारा स्वेच्छिक तौर पर नियंत्रित करता है। धनी लोगों में जन्म दर में कमी के कारण निम्न हैं-

- (i) समाज में धनी वर्ग भौतिक आनन्द अधिक चाहता है, जो कि अधिक बच्चों के कारण संभव नहीं हो सकेगा।
- (ii) धनी-वर्ग अधिक धन एवं सम्पत्ति संचित करने में विश्वास रखते हैं। अधिक जन्म का अर्थ है कि परिवार की सम्पत्ति का बंटवारा हो जायेगा, जिसको त्यागने का वह प्रयत्न करते हैं।
- (iii) धनी वर्ग बच्चों के पालन-पोषण पर अधिक खर्च करते हैं जिससे सम्पत्ति म्रोत पर प्रभाव पड़ता है। यह खर्च जन्म से ही आरम्भ हो जाता है। दूसरी ओर धन की वापसी बहुत देर से करते हैं जिसके फलस्वरूप धनी वर्ग जन्म दर को निम्न रखने का प्रयल करते हैं।

फेल्टर विश्वास करते हैं कि बच्चे पैदा करने की व्यक्तिगत स्वेच्छा पर प्रभाव सामाजिक आर्थिक दबाव से प्रभावित होता है।

गरीब वर्ग अपने बच्चे से आरंभिक आयु से काम कराते हैं जिनके कारण उसमें अधिक जन्म-दर है।

गरीब लोग अपने सन्तान को पालने पर बहुत कम खर्च करते हैं। इसलिए वह संतान की संख्या के प्रति अधिक चिंतित नहीं होते हैं। गरीब वर्ग में बुद्धि तथा सामान्य ज्ञान की कमी होती है। वह अधिक बच्चों के बारे में नहीं सोचते हैं जिससे उनमें बच्चे की जन्म-दर अधिक होती है।